अनुवादक : ज़ेबा बिन्ते अहमद

पब्लिशर : जमीर शैख़

ZulkrNain
Publication's

अनुमोदन

हमने “हदीस इ कुदसी” को हिंदी में अनुवाद करने की पूरी कोशिश की फिर अगर कोई गलती होगयी हो तोह हम अल्लाह से उसकी माफ़ी चाहते है . इस किताब की भाषा सरल रख्री गयी है ताकि पढने वाले को मुश्किल ना जाये. ये किताब सिर्फ और सिर्फ अल्लाह से सवाब के उम्मीद से लिखी गयी है.

आपसे दरख्वास्त है की आप मेरे और मेरे परिवार क भलाई की दुआ करे.

अल्लाह हमारे सारे गुनाहो को माफ़ कर हमें जन्नत नसीब करे.

आमीन ..

-ज़ेबा बिन्ते अहमद.

हदीसे क़ुद्सी 1

हजरत अबु हुरैराह रजि अल्लाहो अनहो से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया "जब अल्लाह ने कायनात की तखलील मुकम्मल कर ली तो अपनी किताब में अपने मुतालिक लिख दिया जो के इस के पास मौजूद है ।
"मेरी रेहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी "
(मुस्लिम , बुखारी , निसाई ,इब्ने माजह)

हदीसे क़ुद्सी 2

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि अल्लाहो ताला अन्हो से रिवायत है की मुहम्मद सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया:- अल्लाह ताला इरशाद फरमाते हैं "इब्ने आदम ने मुझे झुटलाया हालाँकि इसे इस बात का हक़ नहीं पहुँचता था और इस ने मुझे गाली दी हालाँकि इसे इस बात का भी हक़ नहीं पहुँचता था | इस का मुझे झुठलाना तो यह है की यह कहता है अल्लाह ताला मुझे दोबारा पैदा नहीं कर सकेंगे जैसा की मुझे पहले पैदा किया | हालाँकि पहली मरतबा पैदा कर लेना दूसरी मरतबा पैदा करने से ज़यादा आसान नहीं था ! और इस का मुझे गाली देना

यह है के यह केहता है कि अल्लाह ताला की औलाद है | हालाँकि मैं अकेला और बे-नेयाज़ हूँ | ना मैंने किसी को जना है और ना ही मैं किसी से जना गया हूँ | और ना ही मेरा कोई हमसर है | (बुखारी , नसाई)

हदीसे क़ुद्सी 3

हज़रत ज़ैद बिन खालिद ज़ेहनी रज़ि अल्लाहो ताला अन्हो रिवायत करते हैं के :-
रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबियह के मक़ाम पर फजर की नमाज़ पढ़ाई | इस रात बारिश हुई थी | आप सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जो हुए और फ़रमाया " तुम जानते भी हो की हमारे परवरदिगार ने क्या फरमा दिया ?" लोगोँ ने जवाब दिया के "अल्लाह और इसके रसूल ही बेहतर जानते हैं " आप सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह

ताला ने इरशाद फ़रमाया की " मेरे बाज़ बन्दे मुझ पर ईमान लाने वाले हो गए और बाज़ कुफ़्र करने वाले हो गए | जिस ने कहा की अल्लाह के फज़ल और इसकी रेहमत से बारिश हुई वह मुझ पर ईमान लाने वाला और सितारों का इनकार करने वाला है और जिस ने कहा की फ़लां फ़लां सितारे की वजह से बारिश हुई तो वह सितारों पर ईमान लाने वाला और मेरा इनकार करने वाला है |

(बुखारी ,मुवत्ता ,निसाई)

हदीसे क़ुदसि 4

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला इरशाद फरमाते हैं " बनी आदम ज़माने को बुरा भला कहते हैं | हालाँकि मैं ही ज़माना हूँ और दिन रात मेरे ही कब्ज़े कुदरत में है |"
(बुख़ारी ,मुस्लिम)

हदीसे क़ुद्सी 5

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो ताला अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह तबारक वा ताला फरमाते हैं " मैं तमाम शिरकाय में सबसे ज़्यादा मुस्तग़नी हूँ | जिस शख़्स ने कोई अमल किया और इस में मेरे ग़ैर को शरीक किया तो मैं इसे इस के शिर्क के हवाले कर देता हूँ |"
(मुस्लिम , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 6

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लहो अन्हो से रिवायत है की इन्होंने रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना :- क़यामत के दिन सबसे पहले जिस शख़्स के खिलाफ फ़ैसला सुनाया जाएगा ..
(1) वह शख़्स होगा जो दुनिया में शहीद हुआ होगा | इसे अल्लाह ताला के सामने लाया जाएगा | अल्लाह ताला इसे अपनी नेयमतें याद दिलाएँगे | वह इनका ऐतेराफ करेगा | अल्लाह ताला इस से पूछेंगे की तूने मेरी नेयमतों का क्या हक़ अदा किया ? वह जवाब देगा की ऐ अल्लाह मैं तेरे रास्ते में जिहाद करता रहा यहाँ तक के शहीद हो

गया | अल्लाह ताला फरमाएंगे की तुम झूठ कहते हो , तुम ने तो जिहाद इस लिए किया था के लोग तुम्हे ज़राये तमंद (करेजियस) और बहादुर कहें | सो वह दुनिया में कहा जा चुका .. फिर इस के बारे में हुक़्म दिया जायेगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नुम में डाल दिया जाऐगा |

(2) वह शख़्स होगा जिसने इल्म दीन और क़ुरआन करीम की तालीम हासिल की होगी और दूसरों को इसकी तालीम दी होगी | इसे अल्लाह ताला के सामने लाया जाऐगा | अल्लाह ताला इसे अपनी ईनामात याद दिलायेंगे , वह इन सब का अयेतेराफ़ करेगा | अल्लाह ताला इससे पूछेंगें की तूने मेरे ईनामात् का क्या हक़ अदा किया ? वह

जवाब देगा की अए अल्लाह ! मैंने इल्म दीन और क़ुरआन करीम की तालीम हासिल की और आपकी ख़ुशनूदी के हुसूल के लिए दुसरों को तालीम दी | अल्लाह ताला फरमाएंगे तुम झूठ केहते हो , तुम ने तो इस लिए इल्म हासिल किया था की लोग तुम्हे बड़ा आलिम कहें और कुरआन करीम इस लिए पढ़ा था के लोग तुम्हे बड़ा क़ारी कहें | सो वह दुनिया में कहा जा चुका , फिर इस के बारे में हुक़्म दिया जाऐगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाऐगा |

(3) वह शख़्स होगा जिस पर अल्लाह ने वुसअत की होगी और हर किस्म का माल व दौलत इसे अता किया होगा | इसे अल्लाह ताला के सामने

लाया जायेगा | अल्लाह ताला इसे अपने ईनामात की याद दिहानी कराएंगे | वह इन सब का अयेतेराफ़ करेगा | अल्लाह ताला फ़रमाएंगे के तूने इन ईनामात का क्या हक़ अदा किया ? वह जवाब देगा की अए अल्लाह ! मैंने कोई रास्ता ऐसा नहीं छोड़ा जहाँ तुझे ख़र्च करना पसंद हो और मैंने ख़र्च ना किया हो | अल्लाह ताला फ़रमाएंगे "तुम झूठ कहते हो तुम ने तो इस लिए ख़र्च किया था के लोग तुम्हे सखी कहें | सो वह कहा जा चुका | फ़िर इस के बारे मैं भी हुक़्म दिया जायेगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा |

(मुस्लिम , तिर्मिज़ी, निसाई)

हदीसे क़ुद्सी 7

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं के मैंने रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुऐ सुना :-

"तुम्हारा परवरदिगार उस चरवाहे से बहुत ख़ुश होता है जो पहाड़ के दरमियान में अज़ान दे कर नमाज़ पढ़े | अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " मेरे इस बन्दे को देखो , यह मेरे डर से आज़ान दे कर नमाज़ पढ़ रहा है | मैंने अपने बन्दे की मग़फ़िरत कर दी और जन्नत का दाख़िला तय कर दिया | (निसाई)

हदीसे क़ुद्सी 8

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो कहते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-
"जिस शख़्स ने नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ना पढ़ी इसकी नमाज़ नाक़िस(deficient) है " तीन मर्तबा फ़रमाया यानी ना-मुक़म्मल है |हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो से सामाईन ने कहा के हम तो इमाम के पीछे होते हैं , तो उन्होंने कहा की दिल ही दिल में पढ़ लिया करो |मैंने नबी करीम सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम को फरमाते हुऐ सुना है के .. अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " मैंने सूरह फ़ातिहा को अपने और बन्दे के

दरमियान तक़्सीम कर लिया है और मेरा बन्दा जो मांगे वही इसे मिलेगा | पस जब बन्दा केहता है .. अल्हम दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन (तमाम तारीफ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है) तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं " मेरे बन्दे ने मेरी हम्द बयान की |" जब बन्दा कहता है .. अर रेहमान निर् रहीम (बहुत रहम करने वाला , निहायत मेहरबान है) तो अल्लाह ताला फरमाते हैं मेरे बन्दे ने मेरी सनॉ बयान की | और जब बन्दा केहता है .. मालिकी यौमिदीन (रोज़े जज़ा का मालिक है) तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं " मेरे बन्दे ने मेरी बड़ाई बयान की " और बाअज़ रिवायतों में है " मेरे बन्दे ने अपना मुआमला मेरे हवाले कर दिया |" फिर जब कहता है .. इय्याका

नॉ बुदूऊ व इय्याका नस्ताइन (अए अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैँ , और तुझ ही से मदद् तलब करते हैं) तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " यह मेरे और मेरे बन्दे के दरमियान है और मेरा बन्दा जो कुछ भी माँगेगा वही इसे मिलेगा | फिर जब केहता है .. ईह दिनस सिरातल मुस्तक़ीम ० सिरात अल्लज़ीना अन अन् अमता अलई हिम , ग़ई रिल मग़ ज़ूबी अलई हिम व लज़्ज़ ज़वालीन ० (हमे सीधी राह दिखा उन लोगोँ की राह जिन पर तूने इनआम फ़रमाया | ना उन लोगोँ की जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और ना ही उन लोगोँ की जो गुमराह हुए) तो अल्लाह ताला फरमाते हैं " यह मेरे बन्दे के लिये है और जो इस ने माँगा मैंने इसे वही अता कर दिया |

(मुस्लिम, मालिक, तिर्मिज़ी , अबु दाऊद , नसाई इब्ने माजह)

हदीसे क़ुद्सी 9

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो फरमाते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :- क़यामत के दिन बन्दे के आमाल में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा | अगर वह दुरुस्त निकली तो वह कामियाब व कामरान होगा | और अगर वो खराब निकली तो वह नाक़ाम व नामुराद होगा | लेकिन अगर इस के फ़राइज़ में कुछ कमी हुई तो अल्लाह ताला फ़रमाएंगे .. " देखो क्या मेरे बन्दे के पास कुछ नवाफ़िल हैं ?" ताकि इस के फ़राइज़ में जो कमी रह गई है वह इन नवाफ़िल

के ज़रिये पूरी कर दी जाये | फिर इस के तमाम आमाल का हिसाब इसी तरह किया जायेगा | (तिर्मिज़ी , अबु दाऊद , नसाई , अहमद , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 10

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं के रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला इरशाद फ़रमाते हैँ " रोज़ा मेरे लिए है और मैं ख़ुद बज़्ज़ात्ते इस का बदला देता हूँ , क्योंकि रोज़ेदार मेरी ही वजह से अपनी ख्वाहिशात और खाना पीना छोड़ता है | रोज़ा ढ़ाल है | रोज़ेदार के लिए ख़ुशी के दो मौके हैं ..

(1) जब वह इफ़्तार करता है |

(2)जब वह अपने रब्ब से मुलाक़ात करेगा |

और रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के नज़दीक़ मुश्क़ की खुशबू से भी ज़्यादा पसंदीदा है |

(बुखारी , मुस्लिम, तिर्मिज़ी , निसाई , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 11

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला इरशाद फ़रमाते हैं " अए इब्ने आदम ! (तू मेरे रास्ते में) ख़र्च कर , मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा |" (बुख़ारी , मुस्लिम)

हदीसे क़ुद्सी 12

हज़रत अबु मसऊद अंसारी रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- "पहली क़ौमों में से एक शख़्स का हिसाब लिया गया तो इस के पास कोई ख़ास नेक अमल नहीं था अलबत्ता वह मालदार होने की बिनआ पर लोगोँ को क़र्ज़ वग़ैरा दे दिया करता था और अपने ख़ाविंदों(servants) से इसने कह रखा था की मोहताज और ज़रूरतमंदों को मुआफ़ कर दिया करो | हुज़ूर सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया की अल्लाह ताला ने इस से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया " मैं इस तरह (माफ़) करने का

तुमसे ज़्यादा हक़दार हूँ (फिर फरिश्तों से फ़रमाया) इसे भी माफ़ कर दो |

(मुस्लिम, बुखारी , निसाई)

हदीसे क़ुद्सी 13

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं के:- " मैं रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था के दो आदमी आप के पास आये , इन में से एक ने ग़ुरबत की शिकायत की और दूसरे ने रेहज़नी(robbery) कि कसरत की शिकायत की तो रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया की रेहज़नी के अब थोड़े ही दिन हैं | फ़िर ऐसा पर अमन माहोल क़ायम होगा के मक्का मुकर्रमा के लिए बग़ैर किसी किस्म के मुहाफिज़ो(guards) के काफ़िले रवाना हुआ करेंगें | और क़यामत से पेहले पेहले माल इस क़दर आम हो जाएगा के एक शख़्स अपने माल की

ज़कात लेकर गली कूचों में फ़िरता रहेगा मगर इसे कोई क़बूल करने वाला नहीं होगा | फिर तुम में से हर शख़्स अल्लाह के सामने इस तरह ज़रूर खड़ा होगा के इसके और अल्लाह के दरमियान ना कोई परवरदिगार होगा ना ही कोई तर्जुमान(interpreter) | अल्लाह ताला इससे कहेंगे ..क्या मैंने तुम्हें माल नहीं दिया था ? तो वह ऐतेराफ करते हुए कहेगा " क्यों नही (बेशक)! " फिर अल्लाह ताला इससे कहेंगे " क्या मैंने तुम्हारी तरफ रसूल नहीं भेजा था ?" तो वह ऐतेराफ करते हुए कहेगा " क्यों नहीं (बेशक़) ! " फ़िर वह दाएँ जानिब देखेगा तो सिवाय आग के कुछ नज़र नहीं आएगा | फ़िर बाएँ जानिब देखेगा तो भी आग के सिवा कुछ

नज़र नहीं आएगा | लिहाज़ा तुम में से हर शख़्स को आग से अपना बचाव ज़रूर करना चाहिए अगर चेह खजूर के एक टुकड़े ही से हो और अगर यह भी ना हो सके तो अच्छी बात कह कर ही अपना बचाव कर ले |

(बुखारी)

हदीसे क़ुद्सी 14

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- " अल्लाह तबारक व ताला के फ़ाज़िल-गश्ती (supernumerary) फ़रिश्ते हैं जो मजालिसे ज़िक्र् को तलाश करत रहते हैं और जैसे ही इन्हें ज़िक्र की मजालिस मिलती है तो वह इसमें बैठ जाते हैं और अपने परों से एक दूसरे को ढाँपते हुए आसमान की तरफ चढ़ जाते हैं |आप सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह ताला इन से पूछते हैं हालांकि वह इन्हें बहुत ही अच्छी तरह जानते हैं | " तुम लोग कहां से आये हो ? " वह जवाब देते हैं की " हम ज़मीन पर आपके बन्दों के

पास से आ रहे हैं , जो की आप की पाकी और बड़ाई , आप की तौहीद और आपकी हम्द बयान करते हुए आपसे मांग रहे थे |" अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " वह मुझसे क्या मांग रहे थे ?" फ़रिश्ते कहते हैं की " आपसे आप की जन्नत तलब कर रहे थे " | अल्लाह ताला फ़रमाते हैं " क्या उन्होंने मेरी जन्नत देखी है ?" फ़रिश्ते कहते हैं की अए अल्लाह ! देखी तो नहीं | तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैँ " (तुम तसव्वुर तो करो) अगर इन्होंने जन्नत देखी होती तो इनकी क्या कैफ़ियत होती ?" | फ़रिश्ते कहते हैं की " वह आपकी पनाह मांग रहे थे " अल्लाह ताला फ़रमाते हैं " किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ?" तो वह कहते हैं की अए अल्लाह ! आप की आग

से | अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " क्या उन्होंने मेरी आग देखी है ?" फ़रिश्ते कहते हैं " अए अल्लाह ! देखी तो नहीं " | अल्लाह ताला फ़रमाते हैँ (तुम तसव्वुर करो) अगर इन्होंने मेरी आग देखी होती तो इनकी क्या कैफ़ियत होती ? " वह कहते हैं " वह लोग आपसे अस्तग़फ़ार कर रहे थे |" नबी करीम सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कहा के अल्लाह ताला फ़रमाते हैं की " मैंने इन की मग़फ़िरत कर दी और जो वह मांग रहे थे मैंने उनको अता कर दिया और जिस चीज़ से पनाह मांग रहे थे मैंने उनको पनाह अता कर दी |"

रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ..फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं की " अए

अल्लाह ! इन में फ़लां गुनहगार बन्दा वहां से गुज़रते हुए उनके साथ बैठ गया था |" रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया .. अल्लाह ताला फ़रमाते हैं " मैंने इसे भी माफ़ कर दिया क्योंकि यह ऐसे लोग हैं की इन के पास बैठने वाला भी मेहरूम नहीं रहता |

(बुखारी , मुस्लिम , तिर्मिज़ी , निसाई)

हदीसे क़ुद्सी 15

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला इरशाद फ़रमाते हैँ " मैं अपने बन्दे के साथ वैसा ही मुआमला करता हूँ जैसा वह मेरे बारे में यकीन रखता है और मैं इसके साथ होता हूँ जब वह मेरा ज़िक्र करता है | पस अगर वह अपने तौर पर अकेले ही मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी अपने तौर पर अकेले ही इसे याद करता हूँ और अगर वह किसी मजमे(assembly) में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं इससे बेहतर मजमे में इसका तज़किरा करता हूँ , और अगर वह बालिश्त(arm's length) भर मेरे करीब आता है तो मैं एक हाँथ इसके

करीब हो जाता हूँ और अगर वह एक हाँथ मेरे करीब होता है तो मैं दो हाँथ इसके करीब हो जाता हूँ और अगर वह मेरी तरफ चल कर आता है तो मैं दौड़ कर उसकी तरफ आता हूँ |"

(बुखारी , मुस्लिम , तिर्मिज़ी , इब्ने माजह)

हदीसे क़ुद्सी 16

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- तेहक़ीक़ अल्लाह ताला ने नेकियाँ और बुराइयाँ लिख दी हैं फिर इन्हें बयान कर दिया है पस जिस शख़्स ने नेकी का इरादा किया फिर इसे अंजाम ना दे सका तो अल्लाह ताला इसे मुक़म्मल नेकी लिख लेते हैं लेकिन अगर इरादा कर के इस पर अमल भी कर ले तो अल्लाह ताला इसे दस नेकियों से लेकर सात सौ(700) बल्कि इससे भी ज़्यादा बढ़ा चढ़ा कर लिख लेते हैं और जिसने किसी गुनाह का इरादा किया और इस पर अमल ना किया तो अल्लाह ताला इसे भी नेकी शुमार कर लेते हैं |

लेकिन अगर इरादा गुनाह के साथ इसका इरतेक़ाब भी कर ले तो अल्लाह ताला एक ही गुनाह लिखते हैं |

(बुखारी , मुस्लिम)

हदीसे क़ुद्सी 17

हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाह ताला ने रिवायत करते हुए फ़रमाया :- अल्लाह ताला फ़रमाते हैं "अए मेरे बन्दों ! मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम क़रार दे दिया है और इसे तुम्हारे दरमियान भी हराम क़रार दिया है | लिहाज़ा तुम आपस में ज़ुल्म ना किया करो | अए मेरे बन्दों तुम सब के सब गुमराह हो मगर जिसे मैं हिदायत दूँ | लिहाज़ा तुम मुझसे हिदायत तलब करो , मैं तुम्हे हिदायत दूंगा | अए मेरे बन्दों ! तुम सब के सब भूके हो मगर जिसे मैं खाना खिलाऊँ | लिहाज़ा तुम मुझसे खाना तलब करो मैं तुम्हे खाना

खिलाऊंगा |अए मेरे बन्दों तुम सब के सब नंगे हो मगर जिसे मैं कपड़े पहनाऊँ , लिहाज़ा तुम मुझ से कपड़े तलब करो तो मैं तुम्हे कपड़े पहनाउंगा |अए मेरे बन्दों तुम रात दिन गुनाह करते रहते हो और मैं सब गुनाह माफ़ कर देता हूँ लिहाज़ा तुम मुझ से अपने गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करो तो मैं तुम्हारी मग़फ़िरत करूँगा |अए मेरे बन्दों तुम हरगिज़ मेरे नुक़सान तक रसाई नहीं रखते ही की मुझे किसी किस्म का नुक़सान पंहुचा सको और ना ही तुम मेरे नफ़े तक रसाई रखते हो की मुझे किसी किस्म का नफ़ा पंहुचा सको |अए मेरे बन्दों अगर तुम्हारे अगले और पिछले , इंसान और जिन्नात किसी इंतेहाई मुत्तक़ी दिल वाले शख़्स की तरह हो जाए तो उस

से मेरी हुकू़मत में कोई इज़ाफ़ा नहीं होगा |और अगर तुम्हारे अगले व पिछ्ले इनसान और जिन्नात किसी इंतेहाई नाफरमान दिल वाले शख़्स की तरह हो जाए तो इससे मेरी हुकू़मत में कोई कमी नहीं आएगी |

अए मेरे बन्दों अगर तुम्हारे अगले व पिछ्ले जिन्नात और इंसान एक मैदान में जमा होकर मुझसे मांगने लगे और मैं हर एक को इसकी मांगी हुई चीज़ अता करता चला जाऊ तो मेरे पास जो कुछ है इसमें इतनी कमी भी नहीं आएगी जितनी समंदर में सुई डुबोने से आती है |

अए मेरे बन्दों ! यह तुम्हारे अमाल ही हैं जिन्हें मैं महफूज़ कर के रखता हूँ फिर मैं तुम्हे इनका पूरा पूरा बदला देता हूँ लिहाज़ा जिसे कोई खैर मिले

तो वह अल्लाह की हम्द बयान करे और जिसे इसके इलावा कुछ और पहुँचे तो वह अपने इलावा किसी दूसरे को कसूरवार ना ठहराए |
(मुस्लिम , तिर्मिज़ी , इब्ने माजह)

हदीसे क़ुद्सी 18

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला क़यामत के दिन फरमाएंगे " अए आदम की औलाद ! मैं बीमार था , तूने मेरी अयादत नहीं की | तो बन्दा कहेगा अए रब्ब ! मैं आपकी अयादत कैसे करता ? आप तो रब्बुल आलमीन हैं | अल्लाह ताला फरमाएंगे " तुम्हे मालुम नहीं हुआ था ? की मेरा फलाँ बन्दा बीमार है मगर तुमने उसकी अयादत नहीं की | अगर तुम अयादत को जाते तो तुम मुझको उसके पास पाते | अए आदम की औलाद ! मैंने तुमसे खाना तलब किया था मगर तुमने मुझको खाना नहीं दिया |

तो बन्दा कहेगा अए रब्ब ! आपको खाना कैसे खिलाता ? आप तो रब्बुल आलमीन हैं | अल्लाह ताला फरमाएंगे "क्या तुम यह बात नहीं जानते थे ? के मेरे फलाँ बन्दे ने तुमसे खाना तलब किया है | अगर तुम उसे खाना खिला देते तो (आज) उसे तुम मेरे पास पाते |

अए आदम की औलाद ! मैंने तुमसे पानी तलब किया था मगर तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया |

तो बन्दा कहेगा अए रब्ब ! आपको पानी कैसे पिलाता आप तो रब्बुल आलमीन हैं | अल्लाह ताला फरमाएंगे " मेरे फलाँ बन्दे ने तुमसे पानी तलब किया था अगर तुम उसे पानी पिला देते तो (आज) उसे मेरे पास पाते |

(मुस्लिम)

हदीसे क़ुद्सी 19

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :- अल्लाह ताला का इरशाद है " बड़ाई मेरी चादर(cloak) और अज़मत मेरा ज़ेर जामह(robe) है |पस जिस ने इन दोनों में से किसी एक को भी मुझ से छीनने की कोशिश की तो मैं उसे आग में दाल दूंगा |

(अबु दाऊद , इब्ने माजाह , अहमद)

हदीसे क़ुद्सी 20

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :- पीर (monday) और जुमेरात (thursday) के दिन जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं | पस हर उस बन्दे को जो अल्लाह के साथ शिर्क ना करता हो , माफ़ कर दिया जाता है मगर ऐसा शख़्स के उस के और उसके भाई के दरमियान नाराज़गी हो | कहा जाता है के " इन्हें मोहलत दूँ यहाँ तक सुलह कर लें , इन्हें मोहलत दूँ यहाँ तक सुलह कर लें , इन्हें मोहलत दूँ यहाँ तक सुलह कर लें |
(मुस्लिम , मालिक , अबु दाऊद)

हदीसे क़ुद्सी 21

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-

अल्लाह ताला का इरशाद है " तीन अफ़राद के ख़िलाफ़ क़यामत के दिन मैं ख़ुद मद्ई (adversary) बनूँगा :-

(1) जिस शख़्स ने मेरे नाम पर मुआहिदा कर के तोड़ा |

(2) जिस शख़्स ने किसी आज़ाद आदमी को बेच खाया |

(3) जिस शख़्स ने किसी मज़दूर से मज़दूरी कराई और उस से खूब काम लिया फ़िर उसकी उज़रत(wage) अदा ना की |

(बुख़ारी , इब्ने माजाह , अहमद)

हदीसे क़ुद्सी 22

हज़रत अबु सईद रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- " तुम में से कोई शख़्स अपने आप को हक़ीर ना समझे | सहाबा कराम ने अर्ज़ किया , या रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ! हम में से कोई शख़्स अपने आपको हक़ीर कैसे समझेगा ? आपने इरशाद फ़रमाया की वह अल्लाह का कोई हुक़्म तोड़ता हुआ देखे और इसमें कुछ कह सकता हो मगर इसके बावजूद कुछ ना बोले | अल्लाह ताला क़यामत के दिन इससे फरमाएंगे "फलाँ मुआमले में कुछ कहने से किस चीज़ ने रोका था ? वह कहेगा के " लोगों के खौफ ने" |

अल्लाह ताला फ़रमाएंगे "मैं ज़्यादा हक़दार था की तुम मुझसे डरते |"

(इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 23

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं | रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

अल्लाह ताला क़यामत के रोज़ फरमाएंगे " मेरी अज़मत की बिना पर बाहमी तौर पर मुहब्बत करने वाले कहाँ हैं ? आज मैं इन्हें अपने साये में जगह दूंगा जबकि मेरे सायह के इलावा कोई सायह नहीं है |"

(बुख़ारी , मालिक)

हदीसे क़ुद्सी 24

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करते हैं तो जिब्राइल अलैहस सलाम को बुला कर उनसे कहते हैं की मैं फलाँ शख़्स से मुहब्बत करता हूँ तुम भी उससे मुहब्बत करो | चुनान्चे जिब्राईल अलैहस सलाम भी इससे मुहब्बत करने लगते हैं | फिर वह आसमान में ऐलान कर देते हैं के अल्लाह ताला फलाँ शख़्स से मुहब्बत करते हैं , तुम लोग भी उस शख़्स से मुहब्बत करो चुनान्चे तमाम आसमान वाले भी इससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर इसकी मक़बूलियत ज़मीन में पैदा कर दी

जाती है |और जब अल्लाह ताला किसी बन्दे से बोग्ज़ रखते हैं तो जिब्राईल अलैहस् सलाम को बुला कर कहते हैं के मैं फलाँ शख़्स से बोग्ज़ रखता हूँ , तुम भी इससे बोग्ज़ रखो तो जिब्राईल अलैहस् सलाम भी इससे बोग्ज़ रखने लगते हैं , फिर वह आसमान में ऐलान कर देते हैं की अल्लाह ताला फलाँ शख़्स से बोग्ज़ रखते हैं , तुम लोग भी इससे बोग्ज़ रखो |आप ने फ़रमाया की फिर वह (आसमान वाले) लोग इससे बोग्ज़ रखने लगते हैं फिर पुरे ज़मीन में इसके लिए बोग्ज़ फ़ैला दिया जाता है ।

(बुख़ारी , मुस्लिम ,मालिक , तिर्मिज़ी)

हदीसे क़ुद्सी 25

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो नक़ल करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-

अल्लाह ताला ने इरशाद फ़रमाया ! "जिस ने मेरे किसी भी वली को तक़लीफ़ पहुंचाई तो मैं उस के ख़िलाफ़ ऐलाने जंग कर देता हूँ | और मेरे बन्दे के पास मेरा क़ुर्ब हासिल करने के लिए फराइज़ से बेहतर कोई अमल नहीं है और मेरा बन्दा (फराइज़ की पाबन्दी के साथ साथ) नवाफ़िल से भी मेरा क़ुर्ब हासिल करता रहता है | यहाँ तक के मैं तो इसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है । इसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है और इसका हाँथ बन जाता हूँ जिससे वह

पकड़ता है और पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है । और अगर वह मुझसे कुछ मांगता है तो मैं इसे ज़रूर अता करता हूँ और अगर वह मुझसे पनाह तलब करता है तो मैं इसे ज़रूर पनाह अता करता हूँ । और किसी भी काम को अंजाम देते वक़्त मुझे ऐसी हिचकिचाहट (तरद्दुद) कभी नहीं होती जैसे की अपने ईमान वाले बन्दे की रूह कब्ज़ करते वक़्त होती है की वह मौत को नापसंद करता है और मैं इसकी ना-पसंदीदगी नहीं चाहता ।

(बुख़ारी)

हदीसे क़ुद्सी 26

हज़रत अबु उमामा रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह अज़्ज़ा-वजल का फरमान है मेरे दिसतो में सबसे ज़्यादा क़ाबिल रश्क़ मेरे नज़दीक़ वो मोमिन है जो हल्का फुल्का हो । नमाज़ से उसे वाफ़िर हिस्सा मिला हो । अपने रब्ब की इबादत निहायत ख़ूबसूरती से इस ने की हो और छुप कर इसकी इताअत की हो । अवाम-उन-नास में घुल मिल कर रहा हो । उँगलियों से उसकी तरफ इशारे ना किये जाते हों । गुज़ारे के क़ाबिल इसे रोज़ी मिली हो जिस पर इसने सब्र किया हो ।

फिर आप सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना हाँथ झिड़क कर फ़रमाया "इसे जल्दी। मौत आ गई हो। इसपर रोने वाले भी कम हो और इसकी विरासत भी कम हो।"

(तिर्मिज़ी, अहमद , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 27

मसरूक कहते हैं की हमने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि अल्लाहो अन्हो से इस आयत के बारे में पूछा :- (तर्जुमा) " जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुए , तुम उन्हें मुर्दा ना समझो , बल्कि वह ज़िंदा हैं उनके रब्ब के पास उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है ।" तो उन्होंने कहा के हमने इसके बारे पूछा था जिसपर आप सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"इनकी रूहें सब्ज़ परिन्दों के पेटों में हैं । इनके लिए कंदीलें(lanterns) अर्शे-मौला से मुअल्लिक़ हैं , जहाँ चाहती हैं सैर करती हैं और फिर वापिस इन कंदीलो में लौट आती हैं और अल्लाह तबारक व ताला इनकी तरफ ख़ुसूसी तवज्जो फ़रमा कर

इनसे फ़रमाते हैं "तुम्हे किसी और चीज़ की ख़्वाहिश है ? " वह जवाब में कहते हैं की हमे और क्या चाहिए , हम जन्नत में जहाँ चाहें सैर कर सकते हैं " अल्लाह ताला तीन मर्तबा इनसे यही सवाल करते हैं चुनांचे बार बार के सवाल से वह समझ जाते हैं हमारी राए मालूम किये बग़ैर हमे क़तअन्न नहीं छोरा जाएगा तो वह कहते हैं की अए अल्लाह ! हमारी अरवाह(soul) को हमारी दुनयावी अजसाम(body) में वापिस लौटा दे ताकि हम तेरे रास्ते में दोबारा क़त्ल किये जायें , तो जब अल्लाह ताला ने देख लिया की इन्हें मज़ीद किसी नेयमत की ज़रुरत नहीं है तो उन्हें उसी हाल में छोड़ दिया ।

(मुस्लिम , तिर्मिज़ी , निसाई , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 28

हज़रत जूनदूब इब्ने अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-
"तुमसे पहली क़ौमों में एक शख़्स था | वह ज़ख़्मी हो गया जिससे उसे नाक़ाबिले-बरदाश्त तक़लीफ़ होने लगी | चुनान्चे उसने चाक़ू लेकर अपना हाथ काट डाला जिस से इस क़दर खून बहा के उसकी मौत वाक़ई हो गई | तो अल्लाह ताला ने फ़रमाया "मेरे बन्दे ने अपनी रूह निकालने में मुझसे भी पहल(सबक़त) की। मैंने उसपर जन्नत को हराम कर दिया।"
(बुख़ारी)

हदीसे क़ुद्सी 29

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-

अल्लाह ताला इरशाद फ़रमाते हैं " जब दुनिया से अपने मोमिन बन्दे के किसी प्यारे को क़ब्ज़ करता हूँ और सवाब की उम्मीद पर इसे बरदाश्त कर लेता है तो मेरे पास इसके लिए सिवाए जन्नत के और कोई बदला नहीं है।

(बुख़ारी)

हदीसे क़ुद्सी 30

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला का इरशाद है "अगर मेरा बन्दा मेरी मुलाक़ात को पसंद करता है तो मैं भी इसकी मुलाक़ात को पसंद करता हूँ और अगर वह मेरी मुलाक़ात को नापसंद करता है तो मैं भी इसकी मुलाक़ात को नापसंद करता हूँ ।"
(बुख़ारी , मालिक़)

हदीसे क़ुद्सी 31

हज़रत जुनदूब रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की :-

रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बयान फ़रमाया | के एक शख़्स ने कहा की "अल्लाह ताला की क़सम ! अल्लाह ताला फलाँ शख़्स की मग़फ़िरत नहीं करेंगे .. अल्लाह ताला ने फ़रमाया की| मेरे बारे में इस बात की क़सम खाने वाला कौन है | की मैं फलाँ शख़्स की मग़फ़िरत नहीं करूँगा ? मैंने फलाँ की मग़फ़िरत कर दी और तेरे आमाल को क़ालादिम(nullified) करार दे दिया |" या जैसा फ़रमाया|

(मुस्लिम)

हदीसे क़ुद्सी 32

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया के :- एक शख़्स ने ज़िन्दगी भर गुनाह किये | मगर जब इसकी मौत का वक़्त आया तो इसने अपने बेटों को वसीयत की के जब मेरा इन्तेकाल हो जाए तो मुझे आग में जला देना फिर मेरी राख को बारीख कर लेना फिर मुझे समुन्दर में बिखेर देना क्योंकि अल्लाह की क़सम अगर मेरे रब्ब ने अपनी क़ुदरत से जमा कर लिया तो मुझे ऐसा अज़ाब देगा की ऐसा अज़ाब उस ने किसी को नहीं दिया होगा |" तो इसके बेटों ने ऐसा ही किया | अल्लाह ताला ने ज़मीन से कहा के " इसके जौज़रात तूने लिए हैं

वह वापिस कर दे ।" चुनान्चे वह फ़ौरन ही अल्लाह ताला के सामने आ मौजूद हुआ। तो अल्लाह ताला ने इससे कहा के "तूने यह सब क्यों किया ?" इसने कहा अए अल्लाह तेरे ख़ौफ़ व खाशियत के मारे। चुनान्चे अल्लाह ताला ने इसे इसी बिना पर माफ़ कर दिया।

(मुस्लिम , बुख़ारी , निसाई , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 33

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने रब्ब से हिक़ायत करते हुए बयान फ़रमाया :-
"एक शख़्स से गुनाह सरज़द हो गया | फिर उसने कहा अए अल्लाह ! मेरे गुनाह को माफ़ फ़रमा दे | अल्लाह तबारक व ताला ने फ़रमाया के मेरे बन्दे से गुनाह का इरतेक़ाब हो गया फिर इसे ख़याल आया की इसका रब्ब भी है जो गुनाह को माफ़ करता है | और उसपर गिरफ़्त भी करता है| फ़िर दोबारा इससे गुनाह सरज़द हो गया, फिर इसने कहा अए परवरदिगार ! मेरा गुनाह माफ़ फ़रमा दे | अल्लाह तबारक व ताला

ने फ़रमाया के मेरे बन्दे से गुनाह का इरतेक़ाब हो गया फिर इसे ख़याल आया की इसका रब्ब भी है जो गुनाह को माफ़ करता है और उसपर गिरफ्त भी करता है । फिर तीसरी बार गुनाह का मुर्तकिब हो गया । और कहने लगा अए परवरदिगार ! मेरा गुनाह माफ़ फ़रमा दे तो अल्लाह तबारक व ताला ने फ़रमाया के मेरा बन्दा गुनाह का मुर्तकिब हो गया फिर इसे ख़याल आया के उसका रब्ब भी है जो गुनाह को माफ़ कर देता है और उसपर गिरफ़्त भी करता है । तू जो चाहे अमल कर । मैंने तुझे बिलकुल माफ़ कर दिया।
(मुस्लिम , बुख़ारी)

हदीसे क़ुद्सी 34

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की मैंने रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना :- अल्लाह ताला ने इरशाद फ़रमाया.. अए इब्ने आदम ! तू जब भी मुझे पुकारता है और मुझ से उम्मीद क़ायम करता है तो मैं तेरी ना-ज़ेबा हरकतों की परवाह किए बग़ैर तुझे माफ़ कर देता हूँ। अए इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आसमान की बुलंदियों तक पहुँच जाएं फिर तू मुझसे माफ़ी मांगे तो मैं तुझे माफ़ कर दूंगा। अए इब्ने आदम ! अगर तू रूए ज़मीन के बराबर गुनाह कर के मेरे पास आए और मुझसे इस हाल में मिले के तू मेरे साथ किसी को शरीक़ ना ठहराता हो तो मैं रूए

ज़मीन के बराबर मग़फ़िरत से तेरा इस्तेकबाल करूँगा ।

(तिर्मिज़ी , अहमद)

हदीसे क़ुद्सी 35

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-
" हमारे परवरदिगार , मुबारक और बुलंद व बाला , हर रात आसमाने दुनिया पर नुज़ूला-जलाल फ़रमाते हैं जबके रात की आख़िरी तिहाई बाक़ी होती है तो इरशाद फ़रमाते हैं "कौन है मुझसे मांगने वाला के मैं उसकी दुआ क़बूल करूँ , कौन है मुझसे तलब करने वाला के मैं उसे अता करुँ , कौन है मुझसे मग़फ़िरत का तलबगार के मैं उसे माफ़ कर दूँ ?"
मुस्लिम की एक रिवायत में है की सुबह सादिक़ होने तक इसी तरह सदाएं आती रहती हैं।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मालिक, तिर्मिज़ी ,अबु दाऊद)

हदीसे क़ुद्सी 36

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :-

" मोमिन लोग क़यामत के दिन जमा हो कर कहेंगे। क्यों ना हम किसी से अपने रब्ब के यहां शिफ़ाअत करायेँ ! चुनांचे वह लोग आदम अलैहस सलाम के पास आएंगे और उनसे कहेंगे की आप तमाम इंसानों के बाप हैं। अल्लाह ताला ने आपको अपने दस्ते-कुदरत से पैदा किया है और फरिश्तों से आपको सजदा कराया और आपको हर चीज़ के नाम सिखाये । लिहाज़ा आप अपने परवरदिगार के यहां हमारी शिफ़ाअत कर दीजिए ताकि हमें यहाँ से राहत दे। तो वह कहेंगे

मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ और अपना गुनाह याद करके शर्मिंदा होंगे। और कहेंगे तुम लोग नूह अलैहस सलाम के पास जाओ।वह पहले रसूल हैं जिन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अहले-ज़मीन की तरफ मबऊस किया। चुनान्चे वह लोग उनके पास आएंगे तो वह कहेंगे की मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ और अपने उस सवाल का तज़किरह करेंगे जो इन्होंने ला-इल्मी में अपने रब्ब से कर लिया था और उसपर शर्मिंदा होकर कहेंगे की तुम खलील-उल-रेहमान(इबराहीम) अलैहस सलाम के पास जाओ। चुनान्चे वह लोग उनके पास आएंगे तो वह कहेंगे के मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ । तुम लोग मूसा अलैहस सलाम के पास जाओ वह अल्लाह के बर्गज़ीदाह बन्दे हैं । अल्लाह ताला ने इन्हें

शरफे-हमकलामी(to whom Allah talked) अता फ़रमाया और इन्हें तौरात(torah) अता की। चुनान्चे वह लोग उनके पास आएंगे तो वह कहेंगे के मैं उस क़ाबिल नहीं और एक शख़्स को बग़ैर बदले के क़त्ल करने का ज़िक्र कर के अपने रब्ब से शर्मिन्दगी महसूस करेंगे और कहेंगे के तुम लोग ईसा अलैहस सलाम के पास जाओ । वह अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं । कालिमाते अल्लह(Allah's word) और रूहे-अल्लाह(Allah's spirit) हैं । चुनान्चे लोग उनके पास आएंगे तो वह कहेंगे के मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ , तुम लोग मुहम्मद सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास जाओ वह अल्लाह के बर्गज़रीदह बन्दे हैं। अल्लाह ने उनकी सब अगली पिछली

तकसिरात(wrongdoings) माफ़ कर दी है । चुनान्चे मैं अपने रब्ब को देखते ही सजदा-रेज़ हो जाऊंगा तो अल्लाह ताला मुझे जब तक चाहेंगे सजदे में पड़ा रहने देंगे । फ़िर फ़रमाया जाएगा "अपना सर उठाइए और मांगिए और आप को अता किया जाएगा । कहिये आप की बात सुनी जाएगी। शफ़ाअत कीजिए आपकी शफ़ाअत क़बूल की जाएगी तो मैं अपना सर उठाऊंगा और अपने रब्ब की हम्द बयान करूँगा जो वह मुझे सिखाएंगे । फिर मैं शिफ़ाअत करूँगा तो अल्लाह ताला मेरे लिए एक हद मुक़र्रर फ़रमा देंगे तो मैं उन्हें जन्नत में दाख़िल करा दूंगा । फ़िर मैं लौट कर आऊंगा और अपने रब्ब को देखते ही उसी तरह सजदे में गिर जाऊंगा। फ़िर मैं शिफ़ाअत

करूँगा तो अल्लाह ताला मेरे लिए एक हद मुक़र्रर फ़रमा देंगे । और मैं उन्हें जन्नत में दाख़िल करा कर फिर तीसरी मरतबा लौटूंगा फिर चौथी मरतबा लौटूंगा फ़िर कहूँगा के अब तो जहन्नम में वही रह गया है जिसे क़ुरआन करीम ने रोक रखा है और उसपर दाहमी जहन्नम वाजिब हो चुकी है।
(बुख़ारी)

हदीसे क़ुद्सी 37

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- अल्लाह ताला का इरशाद है "मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसे इनामात तैयार कर रखे हैं जिन्हें किसी आँख ने कभी देखा ही नहीं, किसी कान ने कभी सुना नहीं और ना ही किसी इंसान के दिल में इनका वेहम व गुमान गुज़रा |अगर तुम चाहो तो पढ़ो

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاء بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

फला तालमु नफ़सुन मा उखफिया लहुम मिन क़ुर्रति अय्युनिन्न जज़ा अन बिमा कानू या मलूना । (सूरह सजदह :आयात 17)

तर्जुमा:-किसी को मालूम तक नहीं के उनकी आँखों की ठंडक की क्या क्या चीज़ें मख़फ़ी(hidden) रखी गई हैं ।

(बुख़ारी, मुस्लिम , तिर्मिज़ी , इब्ने माजाह)

हदीसे क़ुद्सी 38

हज़रत अबु हुरैराह रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- जब अल्लाह ताला ने जन्नत और जहन्नम को पैदा किया तो जिब्राईल अलैहस सलाम को जन्नत की तरफ भेजा और हुक़्म दिया की जाओ ! जन्नत को और जन्नत वालों के लिए जो इनामात तैयार किये हैं इन्हें देख कर आओ। आप ने फ़रमाया के वह गए । उन्होंने इसे और अहले जन्नत के लिए तैयारशुदा इनामात को देखा। आप ने फ़रमाया के वह लौट कर अल्लाह ताला के पास आए और कहने लगे ! तेरी इज़्ज़त की क़सम ! इसके बारे में जो भी सुन लेगा वह इसमें दाख़िल हुए बग़ैर

नहीं रहेगा तो अल्लाह ताला ने हुक़्म दिया और इसे तक़लीफ़ और ना-गवारियों(forms of hardship) से ढाँप दिया गया। फ़िर अल्लाह ने फ़रमाया ! जाओ ! अब जाकर देखो जो मैंने उसमें जाने वालों के लिए तैयार किया है। वह लौट कर आए। उन्होंने देखा की इसे ना-गवारियों से ढाँपा जा चुका है तो वह अल्लाह ताला के पास लौट कर आए और कहने लगे "तेरी इज़्ज़त की क़सम ! अब तो मुझे ख़तरा लग रहा है के इसमें कोई जा ही नहीं सकेगा । अल्लाह ताला ने फ़रमाया की जाओ ! जहन्नम की तरफ इसे देखो और जो मैंने जहन्नमियों के लिए बनाया है वह देख कर आओ। तो वह तेह-ब-तेह(layer by layer) एक दूसरे पर चढ़ी हुई थी। वह अल्लाह

ताला की तरफ लौट कर गए और कहने लगे। तेरी इज़्ज़त की क़सम ! इसके बारे में सुनने के बाद तो कोई भी इसमें नहीं जाएगा। तो अल्लाह ताला ने हुक़्म दिया और इसे ख्वाहिशात से ढाँप दिया गया। फ़िर फ़रमाया के दोबारा जाओ। तो वह दोबारा गए और कहने लगे के तेरी इज़्ज़त की क़सम ! अब तो मुझे डर है की इसमें जाने से कोई बच ही नहीं सकेगा।

(तिर्मिज़ी, अबु दाऊद, निसाई)

हदीसे क़ुद्सी 39

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- "जन्नत व जहन्नम का बाहमी मुनाज़रा(dispute) हुआ। तो जहन्नम कहने लगी | "मेरे अंदर ज़बरदस्त और मुतकब्बिर(haughty) लोग होंगे" और जन्नत कहने लगी की "मेरे अंदर ज़ोअफ़ा(weak) और मसाक़ीन(poor) होंगे" तो अल्लाह ताला ने दोनों के माबईन फ़ैसला करते हुए फ़रमाया.. " अए जन्नत तू मेरी रेहमत है , मैं जिसपर चाहूँगा तेरे ज़रिये रेहमत करूँगा और अए दोज़ख़ तू मेरा आज़ाब है। मैं जिसे चाहूँगा तेरे ज़रिए अज़ाब दूंगा और तुम दोनों को भरना मेरी ज़िम्मेदारी है।"

(मुस्लिम, बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

हदीसे क़ुद्सी 40

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं की रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया :- "अल्लाह ताला जन्नत वालों से फरमाएंगे। ए जन्नत वालों ! तो वह कहेंगे .. अए हमारे रब्ब ! हम आपकी दरबार में सआदत-मंदी के साथ बार बार हाज़िर हैं , हर किसम की ख़ैर आप ही के क़ब्ज़े क़ुदरत में है " तो अल्लाह ताला फरमाएंगे "क्या तुम राज़ी हो ?" तो वह कहेंगे "अए हमारे परवरदिगार ! हम क्यों ना राज़ी हों, हालांकि आपने हमें इतना कुछ अता किया के अपनी मख्लूक़ में से किसी भी दूसरे को अता नहीं किया !" तो अल्लाह ताला फरमाएंगे। क्या तुम्हें इससे

भी बेहतर अता ना करूँ ?" वह लोग कहेंगे "अए परवरदिगार ! इससे बेहतर और क्या चीज़ हो सकती है ?" अल्लाह ताला फरमाएंगे " आज मैं अपनी रज़ामन्दी तुम्हें अता कर रहा हूँ और आज के बाद तुम लोगों से कभी नाराज़ नहीं होऊंगा।
(बुख़ारी, मुस्लिम , तिर्मिज़ी)